

शनि मंत्र

Shani Mantra

ये शनिदेव के दो सबसे प्रसिद्ध संस्कृत मंत्र हैं। बीज मंत्र "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्वराय नमः" माला पर, प्रायः १०८ बार, जपा जाता है, और नवग्रह स्तोत्र का श्लोक "नीलाञ्जनसमाभासं" सूर्यपुत्र को प्रणाम के रूप में बोला जाता है। भक्त इन्हें शनिवार को, अक्सर सूर्यास्त के समय तिल के तेल का दीपक जलाकर, जपते हैं।

बीज मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्वराय नमः ॥१॥

ॐ। प्रां, प्रीं, प्रौं, सः:: धीमी गति से चलने वाले शनैश्वर को नमस्कार।

नवग्रह श्लोक

नीलाञ्जनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्वरम् ॥२॥

जो नीले काजल के समान आभा वाले हैं, सूर्य के पुत्र और यम के बड़े भाई हैं, छाया और मार्तण्ड (सूर्य) से जन्मे हैं, उन शनैश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ।

स्रोत: Mantra 1 (beej mantra): drikpanchang.com "Shani Mantras" (vedic-mantra/gods/navagraha/lord-shani), cross-checked with shubhpanchang.com (Shani beeja mantra). Mantra 2: Navagraha Stotra, verse 7, as on Sanskrit Wikisource (नवग्रहस्तोत्रम्, attributed to Vedavyasa), cross-checked with drikpanchang.com (Navagraha Stotram and the Shani pranam mantra on the Shani Mantras page)

ये अर्थ हमारा पहला मसौदा हैं। अभी किसी विद्वान ने इनकी जाँच नहीं की है। कोई भूल दिखे तो हमें ज़रूर बताएँ।

getnitya.com/hi/shani/shani-mantra/